उत्तर (Set-1)

खंड–क

1. (क) लेखक ने बुद्धिराम की तुलना निर्दयी महाजन से की है और काकी की तुलना बेईमान एवं भगोड़े कर्ज़दार से की है। काकी को देखते ही बुद्धिराम के क्रोध ने विकराल रूप ले लिया और उन्होंने झपटकर काकी के दोनों हाथ पकड़ लिए। महाजन भी बेईमान कर्ज़दार को देखकर ऐसे ही बुरी तरह झपटता है ताकि वह भागने न पाए।

(ख) बूढ़ी काकी की आशा रूपी वाटिका नष्ट हुई थी। वह बहुत भूखी थीं और खाने की लालसा मन में भरी थी। बूढ़ी काकी को लगा कि शायद मेहमान खा चुके हों और अब उन्हें भी खाना मिल जाए, परंतु उस 'वाटिका' को बुद्धिराम के क्रोध की 'लू' ने नष्ट कर दिया। क्रोध से भरे बुद्धिराम ने उन्हें वहाँ से घसीटते हुए हटा दिया।

(ग) बुद्धिराम और रूपा ने काकी को उनकी इस निर्लज्जता का दंड देने का निश्चय कर लिया था क्योंकि मेहमानों के खाना खाते समय काकी ने वहाँ आने का 'अपराध' किया था। कोठरी में काकी को निर्दयतापूर्वक पटक कर भी बुद्धिराम को चैन नहीं मिला था, इसलिए उन्होंने निश्चय किया कि वे उन्हें भोजन के लिए भी नहीं पूछेंगे।

(घ) लाड़ली ही काकी के लिए दुखी थी।

(ङ) बच्चे को भूख से बिलखता देखकर माँ का 'हृदय ऐंठने' लगा।

2. (क) क्षमा उस साँप को ही सुशोभित होती है, जो विषधर होता है। जिस साँप के न तो 'दाँत हों और न ही विष' उसे क्षमा भी क्या शोभा देगी? अर्थात् विषधर तो क्षति पहुँचाने में सामर्थ्यवान है, अतः क्षमा करना उसकी महानता होगी, परंतु जिसमें दाँत और विष ही नहीं है, वह किसी को क्या क्षति पहुँचा सकता है। अतः उसके क्षमा करने या नहीं करने का कोई औचित्य ही नहीं हैं।

(ख) जब सिंधु पर श्रीराम के अनुनय-विनय का कोई प्रभाव नहीं हुआ, तो श्रीराम की पुरुषोचित क्रोधाग्नि धधक उठी। इसका कारण था कि वीर होते हुए भी विनम्रता के कारण उन्होंने प्रार्थना का मार्ग अपनाया था, परंतु सागर ने उनकी विनम्रता को उनकी कायरता समझ लिया, इसी कारण श्रीराम की क्रोधाग्नि भड़क गई।

(ग) श्रीराम से भयभीत होकर सिंधु त्राहि-त्राहि करने लगा क्योंकि उसने जब राम जैसे शक्तिशाली वीर को अपने समक्ष अनुनय करते देखा तो वह स्वयं को भ्रमवश अधिक शक्तिमान समझ बैठा और उनकी प्रार्थना का कोई उचित उत्तर नहीं दिया। जब क्रोध में आकर श्रीराम ने उस पर अपना शर ताना तो उसके संभावित परिणाम को सोचकर वह भयभीत हो गया और वह त्राहि-त्राहि करने लगा।

(घ) प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ यह है कि बाण अर्थात् शक्ति में ही विनय का तेज बसता है। जो व्यक्ति शक्तिशाली हो, उसी की प्रार्थना भी अर्थपूर्ण होती है अर्थात् बल रहने पर ही लोग विनम्रता की कद्र करते हैं।

(ङ) 'अधीर' शब्द का विग्रह है– 'न धीर', अतः इसमें नञ् तत्पुरुष समास विद्यमान है।

खंड–ख

3. (क) संयुक्त वाक्य

(ख) जब चोर पकड़ा गया, तब लोग उसे मारने लगे।

(ग) कल इतवार के कारण छुट्टी थी।

4. (क) धोबिन द्वारा साड़ी सुखाई गई।

(ख) पक्षियों से आकाश में उड़ा जाता है।

(ग) नीता नहीं हँसती है।

(घ) मेरे द्वारा/मुझसे ग़लती की गई।

5. (क) **घर में** – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, अधिकरण कारक।

(ख) **सफ़ेद** – गुणवाचक विशेषण, विशेष्य–घोड़ा, पुल्लिंग।

(ग) **सम्मान** – भाववाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग।

(घ) **हम** – उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, बहुवचन, कर्ता कारक, पुल्लिंग।

6. (क) हास्य रस का स्थायी भाव 'हास' है।

(ख) प्रस्तुत पंक्ति में 'भयानक रस' है।

(ग) वीभत्स रस का अनुभाव है—छिः छिः करना, नाक-भौंह सिकोड़ना आदि।

(घ) जसोदा हरि पालने झुलावै।
हलरावै, दुलराई, मल्हावे, जोई सोई कछु गावै॥

खंड–ग

7. (क) संस्कृति से यदि लोककल्याणार्थ की भावना समाप्त हो जाए तो वह असंस्कृति बन जाती है। कल्याण-भावना के तिरोहित हो जाने पर मानव दूसरों का अहित और विनाश करने पर तुल जाता है। इस परिस्थिति में मनुष्य के अंदर की संस्कृति 'असंस्कृति' का रूप धारण कर लेती है।

(ख) हमारी संस्कृति का परिणाम ही सभ्यता है। हमारे खाने-पीने के तौर-तरीके, ओढ़ने-पहनने के ढंग, गमन और आगमन के साधन और यहाँ तक कि आपस में लड़ने का तरीका भी सभ्यता का ही अंग है।

(ग) लेखक के अनुसार, संस्कृति वह योग्यता है जो हमें अपनी आवश्यकतापूर्ति के साधनों का आविष्कार कराती है, भूत व भविष्य के गर्भ में झाँकने का तरीका सिखाती है तथा मानवीय गुणों का विकास करती है।

8. (क) लेखिका मन्नू भंडारी ने स्वयं अपनी माँ को एक आदर्श नारी माना है। उनके अनुसार वे त्याग और धर्म के कारण महानता के चरमोत्कर्ष पर थीं। इसके बावजूद वे उन्हें अपना आदर्श नहीं बना सकीं क्योंकि माँ का स्वभाव उन्हें भीरू लगता था। वे पिताजी की हर बात को सहन करती थी, जबकि लेखिका स्वतंत्रता को अपना अधिकार समझती थीं। माँ की अत्यधिक सहनशीलता उन्हें स्वीकार्य नहीं थी, अतः माँ उनकी आदर्श नहीं बन पाईं।

(ख) लेखक के अनुसार, पुराणों आदि में स्त्रियों की शिक्षा संबंधी नियमों का उल्लेख न मिलने के दो कारण हो सकते हैं। प्रथम तो यह कि उनके लिए कोई अलग विश्वविद्यालय नहीं थे और दूसरा कारण, जो मात्र अनुमान है, हो सकता है कि उनसे संबंधित साक्ष्य नष्ट हो गए हों अथवा कुचक्र यानी षड्यंत्र के अंतर्गत नष्ट कर दिए गए हों।

(ग) बिस्मिल्ला खाँ साहब जितने उच्चकोटि के कलाकार थे, उतने ही उच्चकोटि के व्यक्ति भी थे। समस्त दुनिया उनकी शहनाई-वादन का लोहा मानती थी और लोग उन्हें विशिष्ट आदर भी देते थे। खाँ साहब इतने विनम्र थे कि उन्हें अपनी उपलब्धियों का कभी भी अभिमान नहीं हुआ। 'भारतरत्न' की उपाधि प्राप्त करके भी वे सदा विनीत रहे और सादा जीवन ही जिया। वे सभी धर्मों और दूसरे कलाकारों का सम्मान करते थे।

(घ) लेखक को फ़ादर बुल्के के चेहरे पर सदैव वात्सल्य, प्रेम, शांति, गंभीरता तथा साथ ही अनासक्ति की भावनाएँ दृष्टिगत होती थीं। इसलिए उन्हें याद करना लेखक को उदास शांत संगीत सुनने जैसा लगता था। ऐसा संगीत जो मन को सांत्वना, ठहराव और आनंद तो देता है, परंतु साथ ही उदासी भी देता है। अतः लेखक को ये दोनों, फ़ादर बुल्के और उदास संगीत, एक जैसे लगते हैं।

9. (क) फूल वसंत आने पर खिलते हैं और पृथ्वी की शोभा बढ़ाते हैं। वसंत ही फूलों का विकास-काल होता है। यदि ऋतु बीत जाने पर फूल खिले तो उसकी शोभा मन को वह प्रसन्नता नहीं दे पाती, जो सही समय पर देती। अतः फूल और सफलता उचित समय पर ही मन को लुभाते हैं।

(ख) कवि को पंथ इसलिए नहीं दिख रहा है क्योंकि वह दुविधाग्रस्त है और किंकर्तव्यविमूढ़ भी। ऐसी मनःस्थिति में व्यक्ति को प्रायः अपने समक्ष पड़ी वस्तु भी दिखाई नहीं देती। ऐसा होना स्वाभाविक है क्योंकि साहसहीनता और दुविधाएँ हमारे सोचने-समझने की शक्ति को प्रायः नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।

(ग) इस काव्यांश में छाया का अर्थ अतीत की स्मृतियाँ हैं और वे सदैव दुख ही देती हैं। अतः कवि ने छाया को छूने से इसलिए इंकार किया है क्योंकि वे मन को दुखाती हैं।

10. (क) विनम्रता उस व्यक्ति को सुशोभित होती है, जिसमें साहस और शक्ति हो। जो स्वयं ही दीन-हीन, साहस-विहीन एवं बलहीन हो, तो उसकी विनम्रता का कोई महत्त्व नहीं होता। यदि शक्तिशाली व्यक्ति साहसी भी हो और विनम्र भी, तो कई अप्रिय घटनाओं को होने से रोका जा सकता है।

(ख) विदाई के समय माँ अपनी बेटी को जो शिक्षा दे रही है, वे सब अनुभवजन्य और व्यावहारिक हैं। वह बेटी को समझा रही है कि वस्त्राभूषणों को कभी भी अपना बंधन नहीं बनने दो। कभी भी अपने सौंदर्य पर स्वयं ही मोहित न हो जाओ। जीवन में हमेशा व्यावहारिक रहने संबंधी सीख माँ की अमूल्य सीख है। साथ ही, वह यह भी चाहती है कि बेटी मात्र सिर झुका कर सब कुछ सहने वाली आज्ञाकारिणी न बने, बल्कि शक्ति और साहस की जीवंत मूर्ति हो।

(ग) संगतकार की भूमिका मुख्य-गायक को सँभालने की रहती है। वह पार्श्व से उसे अपना पूरा सहारा देता है। उसकी आवाज़ तथा गायकी कभी भी खुलकर इसलिए नहीं उभरती ताकि मुख्य-गायक की आवाज़ और गायन प्रभावित न हो और श्रोताओं के सामने उसका स्वर या प्रभाव क्षीण न हो।

(घ) कवि ने स्वयं ही इस कविता द्वारा यथार्थ पूजन का संदेश दिया है। मानव-मन या तो भूत के सागर में गोते लगाता रहता है अथवा भविष्य के कल्पनालोक में डूबा रहता है। वह वर्तमान में जीना भूलता ही जा रहा है। वास्तव में वर्तमान समय ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। कविता का मुख्य संदेश यही है कि वर्तमान में जियो, उसे सँवारो और उससे अनुकूलता बनाओ। भूतकाल दुख देता है और भविष्य मात्र मृगतृष्णा।

11. यूमथांग, गंतोक आदि स्थानों में भ्रमण करते समय लेखिका को जहाँ प्राकृतिक सौंदर्य ने अभिभूत किया, वहीं वहाँ के लोगों के उच्च मानवीय मूल्यों ने भी उनके मन को गहराई से छुआ। वहाँ के लोगों को लेखिका ने 'मेहनतकश बादशाह' तक कहा है। वे कठिनाइयों को झेलते हैं, निरंतर श्रम करते हैं तथा मस्त रहते हैं। लेखिका उन्हें प्राकृतिक सौंदर्य का रक्षक मानती है। वे लोग आधुनिक पीढ़ी की तुलना में प्रकृति को बिल्कुल भी नुकसान नहीं पहुँचाते वरन् अपने श्रम द्वारा निरंतर उसे सँवारते हैं।

जीवन की जिजीविषा, दैन्यता, भूख के साथ संघर्ष करते हुए भी वे वहाँ अपने लोगों के लिए सड़क, पुल बनाने के लिए कुदालों और हथौड़ों के साथ सदैव लीन रहते हैं। इन कठिनाइयों में भी वे पहाड़ों, नदियों आदि की पूजा करते हैं ताकि प्रदूषण न फैले। वे अपने संसाधनों का कभी भी दुरुपयोग नहीं करते। लेखिका को लगता है कि राष्ट्रीय विकास में उनकी सहभागिता अतुलनीय है।

जब आज के समय में लोग स्वार्थपूर्ति हेतु प्रकृति को नुकसान पहुँचाने में ज़रा भी नहीं हिचकते, वहीं ये क्षुधा झेलते पहाड़ी लोग प्रकृति के संरक्षक बने हुए हैं और अपनी मेहनत से उसे सँवार रहे हैं।

अथवा

दुलारी को तथाकथित विशिष्ट समाज अपने सामाजिक दायरे से बाहर ही मानता था क्योंकि वह समाज के उस वर्ग से संबंधित थी, जो सम्मान और प्रतिष्ठा का पात्र ही नहीं था। दुलारी को भले ही कोई विशिष्ट न माने परंतु उसके चारित्रिक गुण उसे विशिष्टता प्रदान करते हैं।

वह अत्यंत निर्भीक है और वह छुई-मुई की भाँति लजीली नारी नहीं वरन् वीरांगना थी। उसमें इतना साहस था कि वह किसी भी पुरुष को ललकार सके। पुलिस के मुखबिर को भी वह पीट देती है। उसके आसपास के लोग उसे ज्वाला मानते हैं। वह क्रोधी और कर्कशी है, परंतु उतनी ही कोमल हृदय भी है।

अपने देश के लिए वह किसी से भी अधिक सच्ची देशभक्त है। वह टुन्नू के बलिदान पर फूट-फूटकर रोती है और गाकर उसके प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करती है और वह भी सूती धोती पहन कर। उसका एक-एक कार्य उसके अंतर्मन की विशेषताओं को पाठकों के समक्ष लाता है और दुलारी को एक विशिष्ट महिला मानने के लिए विवश कर देता है।

खंड–घ

12. (क) **शिक्षा और परीक्षा**

शिक्षा प्रत्येक मनुष्य के जीवन में विशेष महत्त्व रखती है। उद्देश्यपूर्ण ढंग से कुछ सीखना और उसके अनुसार जीवन व्यतीत करना ही शिक्षा कहलाता है। शिक्षा हमें विवेक, ज्ञान तथा मूल्य प्रदान करती है और हमारे विचारों को परिष्कृत करती है। शिक्षा हमारे अंदर के प्रच्छन्न गुणों को उभारती है और हमारी कार्य-क्षमता का उचित विकास करते हुए हमें अपनी संभावित क्षमताओं का सदुपयोग करना भी सिखाती है। शिक्षा और परीक्षा परस्पर सुसंबद्ध है। जो कुछ भी पुस्तकीय, व्यावहारिक ज्ञान हम प्राप्त

करते हैं, उसे परीक्षा द्वारा हमें परखने का अवसर मिलता है। प्रारंभ काल से ही शिक्षा को परीक्षा के साथ जोड़कर रखा गया है। परीक्षा का महत्त्व इसलिए भी है क्योंकि व्यक्ति मात्र शिक्षा प्राप्त करके ही अपने को सुयोग्य और पारंगत मान लेता है, जबकि परीक्षा देने पर उसे यह वास्तविकता ज्ञात होती है कि वह कितना सुयोग्य अथवा पारंगत है?

आधुनिक समय में परीक्षा को लेकर विद्रोह के स्वर उठने लगे हैं। प्रगतिवादी विचारक, छात्र आदि इसे शिक्षा-प्रणाली के दोष के रूप में देखने लगे हैं। पुस्तकाधारित होने के कारण भी परीक्षा के ढंग पर आरोप लगाए जाते हैं कि ऐसी परीक्षा को किसी की योग्यता को मापने का मापदंड मानना ही गलत है। छात्र आजकल परीक्षा आने पर बहुत तनावग्रस्त हो जाते हैं। अनेक बार तो आत्महत्या तक के मामले भी सामने आए हैं। तो क्या सचमुच परीक्षा शिक्षा-प्रणाली में अपनी महत्ता खोती जा रही है? ध्यानपूर्वक देखें तो यह पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा जगत में भी चकाचौंध अपनी पकड़ बना रही है। ऊँची फीस वाले स्कूल, उच्च-महँगे शौक वाले क्रियाकलाप, तरह-तरह के दिवसों का भव्य आयोजन आदि विद्यालयों की शान बन रहे हैं और पुस्तकों का ज्ञान पिछड़ रहा है। ऐसे में परीक्षा एक अनुपयोगी वस्तु बनती जा रही है, जबकि वास्तव में बिना परीक्षा के शिक्षा महत्त्वहीन हो जाएगी।

(ख) **भावात्मक एकता**

भारत एक विविधता-संपन्न राष्ट्र है। यहाँ अनेक धर्मों, भाषाओं तथा विचारों वाले लोग एक साथ रहते हैं। हमारे देश का संविधान हमें किसी भी धर्म को मानने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। हम जो चाहे वह भाषा बोल सकते हैं, किसी भी पूजा-पद्धति को अपना सकते हैं। स्वतंत्रता के साथ यह भी आवश्यक है कि अपने देश और राष्ट्र में, हम सब में एकता भी हो और समन्वय की भावना भी। भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में सद्भावना और शांति बनाए रखने के लिए दूसरों की स्वतंत्रता, धर्म, भाषा, संस्कृति आदि का सम्मान करना अत्यंत आवश्यक है। इसी को हम भावात्मक एकता की संज्ञा दे सकते हैं।

यदि भावात्मक एकता नहीं होगी तो विभिन्न संप्रदायों की हिंसा, आपसी वैमनस्य तथा भाईचारे का अभाव हमारे देश में आंतरिक कलह का कारक बनेगा, जिससे हमारे देश की सुरक्षा को सदैव खतरा बना रहेगा। स्थायित्व के अभाव में कोई भी व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता का पूरा उपयोग नहीं कर सकता। जिस धर्म और भाषा, संस्कृति ने नाम पर हम मर-मिटने की बातें करते हैं, उसी का अस्तित्व हम बचा नहीं पाएँगे।

कुछ भ्रमित लोग सदैव लोगों को पथभ्रष्ट कर इस एकता पर आक्रमण करते आए हैं। लोगों को कभी धर्म और कभी भाषा के नाम पर आपस में ही मरने-कटने को तैयार कर वे न केवल मानवीयता को चोट पहुँचाते हैं, वरन् हमारी गंगा-यमुनी संस्कृति को भी मलिन करते हैं।

हमारी अपनी एकता का अस्तित्व तभी बचा रहेगा, जब ऐसे अवांछित तत्वों का हम पूर्ण परित्याग करें ओर अपने पूर्व गुरुओं और मनीषियों के सद्वचनों को मानें क्योंकि सभी एक ईश्वर की संतान हैं और किसी भी घृणा के लिए हमारे जीवन में स्थान नहीं हैं। हम स्वयं को बस प्रेम के बंधन में बाँध लें।

(ग) **विश्व पटल पर बनता युद्ध का दृश्य**

युद्ध एक विभीषिका है। यह एक ऐसी अग्नि है जो सब कुछ बस निगल लेती है, चाहे वह मानव का बहुमूल्य जीवन हो, प्रकृति की सुंदरता हो या राष्ट्रों का विकास हो। प्रायः सभी राष्ट्र इस प्रयास में रहते हैं कि कोई ऐसी स्थिति आए ही नहीं कि युद्ध झेलना पड़े।

महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक हमने युद्ध के दुष्परिणाम झेले हैं। जापान ने तो अमेरिका के हाथों ऐसी अमानवीयता झेली है, जिसके निशान आज तक उसकी धरती पर उपस्थित हैं। ऐसा नहीं कि दो देश ही आपसी युद्ध का परिणाम भुगतते हैं, बल्कि समस्त विश्व किसी-न-किसी रूप में इससे प्रभावित होता है।

जैसे-जैसे विज्ञान की प्रगति के कारण राष्ट्र विनाशकारी शक्तियों से संपन्न होते जाते हैं, वैसे-वैसे उनमें अहं भावना सिर उठाने लगती है। आज उत्तर कोरिया और अमेरिका जैसे दो परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्रों के अहं टकरा रहे हैं और विश्व के आकाश में युद्ध के बादल मँडरा रहे हैं। अमेरिका और उत्तर कोरिया के राष्ट्र-प्रमुख शब्दों के वार एक-दूसरे पर करते रहते हैं और उनकी

भयानक धमकियों के कारण समस्त विश्व भयाक्रांत है। एक से बढ़कर एक शक्तियों से लैस ये दोनों देश भले ही एक-दूसरे पर वार करें, परंतु इसका दुष्परिणाम विश्व की समस्त मानवता को झेलना होगा। अब जो भी युद्ध होगा, वह विश्व-युद्ध ही होगा।

इस भीषण घमासान के पश्चात् कोई रोने को बचेगा भी या नहीं, यह कहना मुश्किल है। बस ईश्वर से प्रार्थना की जा सकती है कि वह मानव-जाति को सद्बुद्धि दे।

13. एम.एम. शर्मा

दिल्ली।

सेवा में

निदेशक

स्वास्थ्य विभाग

दिल्ली सरकार, नई दिल्ली

दिनांकः 17/10/2017

विषयः मिलावटी सामान बेचने के संबंध में।

महोदय,

मुझे अत्यंत दुख के साथ आपको सूचित करना पड़ रहा है कि बुराड़ी क्षेत्र में निरंतर नई-नई दूध-दही आदि बेचने की अनेक डेयरियाँ खुल रही हैं और वहाँ जो सामान बेचा जा रहा है, वह न केवल निकृष्टतम श्रेणी का है वरन् मिलावटी भी है।

प्रायः लोग दूध में पेंट आदि का मिलावट की शिकायत करते पाए जा रहे हैं। दही, पनीर, घी आदि में भी मिलावट लोगों ने पकड़ी है। इसके बावजूद इन डेयरियों का न तो कोई सामान ज़ब्त किया गया है तथा न ही किसी सरकारी अधिकारी ने यहाँ आकर मुआयना ही किया है।

आपसे अनुरोध है कि कृपया इन सामानों के नमूनों की जाँच करवाई जाए और मिलावट पाए जाने पर तुरंत उचित कार्यवाही की जाए, ताकि लोगों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ बंद हो सके।

धन्यवाद।

भवदीय

एम.एम. शर्मा

अध्यक्ष

बुराड़ी जन कल्याण संस्था

अथवा

सुशांत छात्रावास

नई दिल्ली।

दिनांकः 17/10/2017

प्रिय राजीव,

सप्रेम नमस्कार।

आज ही माँ का पत्र मिला और ज्ञात हुआ कि जब भी तुम्हारे विद्यालय की ओर से किसी शैक्षणिक यात्रा का आयोजन होता है, तुम इंकार कर देते हो। माता-पिता के लाख समझाने पर भी विद्यालय द्वारा आयोजित किसी कार्यक्रम में तुम भाग नहीं लेते।

प्रिय अनुज, यह उचित नहीं है। विद्यालय की ओर से प्रायः हमें उन स्थानों पर ही शैक्षणिक भ्रमण के लिए लेकर जाया जाता है, जो हमारे पाठ्यक्रम की दृष्टि से बहुत उपयोगी होते हैं। इतिहास आदि का जो ज्ञान हमें वहाँ जाकर और आँखों से देखकर प्राप्त होता है, वैसा ज्ञान पुस्तकों में लिखे वर्णन को पढ़कर नहीं हो सकता। तुम्हें ऐसी यात्राओं तथा क्रियाकलापों में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए क्योंकि ये तुम्हारे संपूर्ण मानसिक विकास के लिए अति आवश्यक हैं। आशा है तुम मेरी सलाह को ध्यान में रखते हुए अब अवश्य ही इन गतिविधियों में भाग लोगे।

घर पर माता-पिता जी को नमस्कार तथा तुम्हें ढेर-सा स्नेह।

तुम्हारा स्नेही अग्रज

देवांश

14.

परवाज़ एयर कंपनी

प्रस्तुत करते हैं

''समीरा एयर प्यूरिफ़ायर''

विशेषता–
- हल्का एवं पहिएदार
- तीन रंगों में उपलब्ध-गुलाबी, नीला, सफ़ेद
- प्लास्टिक बॉडी
- चलते ही दे शुद्ध वायु का अहसास
- आसान किस्तों में उपलब्ध

हवा का शुद्धिकरण है समय की माँग

आज के प्रदूषणयुक्त वातावरण से मुक्ति पाने का विश्वसनीय उपकरण

आज ही खरीदें

संपर्कः परवाज एयर कंपनी, सैक्टर–32, नोएडा

अथवा

क्या आप पीले दाँतों से परेशान हैं?
मुँह की दुर्गंध से हैरान हैं?
किसी पुराने टूथपेस्ट से दुखी हैं?
नए टूथपेस्ट की तलाश है?

तो ले आइए–

दाँतों का नया मित्र
मोती टूथपेस्ट

रूपवान कंपनी लेकर आई है दाँतों को मोतियों की तरह चमकाने वाला नया नमकयुक्त टूथपेस्ट
दाँतों का पीलापन तथा मुँह की दुर्गंध दूर भगाएँ।
तुरंत अपनाएँ!

₹ 10/- के छोटे पैक में भी उपलब्ध

मोती टूथपेस्ट

हर दुकान पर उपलब्ध।